

न्यायालय प्रीमियम राजस्व स्टैंड, 50000 ग्वालिबर

253



R-1935-I/07

1- श्रीमती सुनीता सिंह बत्नी श्री धनश्याम सिंह, निवासी -अतरा विवा
बादा उत्तर प्रदेश

2- श्रीमती नीतू सिंह बत्नी श्री विक्रम सिंह, निवासी -कृष्णगर तला
:----- निगरानीकर्ता

श्री मुकेश माताजी
द्वारा आज दि. 12-12-07 को प्रस्तुत।

बनाम

नगर सचिव
राजस्व मण्डल नं० प्र० ग्वालिबर

1- 50 गुंठे जमीन
2- राजमाता कवितेप्रवरी देवी बत्नी स्व.श्री चरणामृत सिंह जूदेव, निवासी

मैहर,

3- अक्षराम सिंह तनय स्व.श्री चरणामृत सिंह जूदेव- मैहर,

:----- गैर निगरानीकर्ता

निगरानी विरुद्ध निर्णय न्यायालय आयुक्त
महोदय रोबा, संभाग रोबा, प्रकरण क्रमांक
218/निगरानी/06-07 आदेश दि. 22.9.07
अन्तर्गत धारा 50 म० प्र० राजस्व संहिता
1959 ई.।

W3
मुकेश माताजी
12-12-07 (1050)केट
ग्वालिबर

मान्यवर,

निगरानी के आधार निम्न है:-

1:- यह कि अधीनस्थ न्यायालयों का निर्णय दिनांक 27.8.07
व दिनांक 22.9.07 प्रक्रिया के विपरीत होने से निरस्त किये जाने योग्य
है।

2:- यह कि विवादित भूमियां श्री चरणामृत जूदेव निवासी-मैहर
के नाम थी। उक्त भूमियां किये से तालमन है, जितने उक्त भूमियों के भूमि
स्वामी स्व.श्री चरणामृत सिंह जूदेव के और उक्त भूमियों को उन्हीने

सुनीता सिंह

राजस्व मण्डल, मध्य प्रदेश - ग्वालियर

अनुवृत्ति आदेश पृष्ठ

प्र0क01935-एक/2007निगरानी

जिला सतना

थान तथा

दिनांक

कार्यवाही तथा आदेश

पक्षकारों एवं अभि

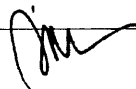
आदि के हस्ता.

18-1-17

निगरानी मेमो में अंकित आधारों पर हितबद्ध पक्षकारों के अभिभाषकों के तर्क सुने तथा अधीनस्थ न्यायालय के अभिलेख का अवलोकन किया गया। यह निगरानी आयुक्त, रीवा संभाग, रीवा के प्रकरण क्रमांक 218/2006-07 निगरानी में पारित आदेश दिनांक 22-09-2007 के विरुद्ध म0प्र0भू राजस्व संहिता, 1959 की धारा 50 के अंतर्गत प्रस्तुत की गई है।

2/ प्रकरण का सारौंश यह है कि अनावेदक क्रमांक 2 एवं 3 ने व्यवहार न्यायाधीश वर्ग-1 मेहर जिला सतना के प्रकरण क्रमांक 50 ए/79 में पारित आदेश दिनांक 27 फरवरी 1992 की प्रति सहित आवेदन प्रस्तुत कर तहसीलदार मेहर से मांग की कि मौजा मेहर की भूमि सर्वे क्रमांक 16 रकबा 14 वीघा 17 विसवा एवं सर्वे क्रमांक 64 रकबा 9 वीघा 1 विसवा (आगे जिसे वादग्रस्त भूमि सम्बोधित किया गया है) के स्व.चरणामृत सिंह जू देव भूमि स्वामी थे एवं वादग्रस्त भूमि माननीय व्यवहार न्यायालय के आदेश के पालन में स्व.चरणामृत सिंह जू देव के नाम अंकित होना चाहिये थे। वह स्व.चरणामृत सिंह जू देव के वारिस है इसलिये शासकीय अभिलेख में भूमि उनके नाम दर्ज की जावे। तहसीलदार मेहर ने प्रकरण क्रमांक 20 अ

R/114



74/2004-05 पंजीबद्ध किया तथा जॉच एवं सुनवाई उपरांत आदेश दिनांक 10-12-2004 पारित किया तथा वादग्रस्त भूमि का भूमिस्वामी स्वर्गीय चरणामृत के नाम घोषित करने के आदेश दिये। तदुपरांत भूमि अनावेदक क्रमांक 1 एवं 2 के नाम होने के पर उन्होंने पंजीकृत विक्रय पत्र दिनांक 4-1-200 से आवेदकगण के हित में विक्रय कर दी एवं विक्रय पत्र के आधार पर ग्राम की नामान्तरण पंजी के सरल क्रमांक 5 पर आदेश दिनांक 24-1-2006 से क्रेतागण के नाम हुई।

अनुविभागीय अधिकारी, मेहर ने समाचार पत्र की खबरों पर से तहसीलदार मेहर के प्रकरण क्रमांक 20 अ 74/2004-05 एवं प्रकरण क्रमांक 57 अ 6/03-04 का परीक्षण कर पत्र दिनांक 16-5-07 से कलेक्टर सतना को जॉच प्रतिवेदन अघोषित किया, जिस पर से कलेक्टर सतना ने आवेदकगण एवं अनावेदक क्रमांक 2 व 3 के विरुद्ध स्वमेव निगरानी प्रकरण क्रमांक 48/06-07 पंजीबद्ध करके कारण बताओ नोटिस जारी किया तथा सुनवाई उपरांत आदेश दिनांक 27-8-2007 पारित करके तहसीलदार मेहर का प्रकरण क्रमांक 20 अ 74/2004-05 में पारित आदेश दिनांक 10-12-2004 एवं नामान्तरण पंजी के सरल क्रमांक 5 पर दिय गये आदेश दिनांक 24-1-2006 को निरस्त कर दिया। इस आदेश के विरुद्ध आवेदकगण ने आयुक्त, रीवा संभाग, रीवा के समक्ष निगरानी क्रमांक 218/2006-07 प्रस्तुत की, जिसमें पारित आदेश दिनांक 22-09-2007 से निगरानी अस्वीकार की गई। इसी आदेश से परिवेदित होकर यह निगरानी है।

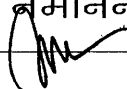
राजस्व मण्डल, मध्य प्रदेश - ग्वालियर

अनुवृत्ति आदेश पृष्ठ

प्र०क०१९३५-एक/२००७निगरानी

जिला सतना

थान तथा दिनांक	कार्यवाही तथा आदेश	पक्षकारों एवं अभि आदि के हस्ता.
	<p>करने एवं अधीनस्थ न्यायालय के अभिलेख के अवलोकन से यह निर्विवाद है कि तहसीलदार मेहर ने स्वर्गीय चरणामृत सिंह जू देव के नाम वादग्रस्त भूमि व्यवहार न्यायाधीश वर्ग-1 मेहर जिला सतना के प्रकरण क्रमांक 50 ए/79 में पारित आदेश दिनांक 27-2-1992 के परिपालन में विचारित की है। हालांकि अनुविभागीय अधिकारी के प्रतिवेदन दिनांक 16-5-07 में बताया गया है कि व्यवहार न्यायालय के आदेश दिनांक 27-2-92 के विरुद्ध अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश मेहर के न्यायालय में अपील में आदेश दिनांक 6-5-99 पारित हुआ है इस आदेश के पद 20 में निर्धारित किया गया है कि उपरोक्त उल्लेखित कारणों से इस परिवर्तन के साथ वादी अपनी साक्ष्य द्वारा यह प्रमाणित करने में सफल रहा है कि जब राज्य का विलीनीकरण हुआ था उस समय भारत सरकार एवं मध्य प्रदेश शासन के संविदा के अनुसार उसकी व्यक्तिगत संपत्ति को जो सूची प्र०डी०५ सी, के अनुसार बनाई गई थी उसमें सूची के क्र. 1 में उल्लेखित व्यक्तिगत संपत्ति पैलेस ऐट मेहर, अस्पताल, गैरज, टेंपिल आफ मदनमोहन जी, टेंपिल आफ विहारी जी, ओपन स्पेस को उनकी प्राईवेट प्रापर्टी माना गया है। तहसीलदार मेहर ने माननीय व्यवहार न्यायालय के</p>	

उक्तादेशों के क्रम में प्रकरण क्रमांक 20 अ 74/2004-05 में जाँच की है एवं वादग्रस्त भूमि ओपन स्पेस को उनकी प्राईवेट प्रापर्टी जाँच में प्रमाणित होने से आदेश दिनांक 10-12-2004 से स्वर्गीय चरणामृत सिंह के नाम की हैं, जिसके विरुद्ध कलेक्टर सतना ने दिनांक 15-5-2007 को 29 माह से अधिक अवधि वाद स्वमेव निगरानी दर्ज की है, जबकि मोहन तथा अन्य एक विरुद्ध मध्य प्रदेश राज्य 1999 रा0नि0 363 का दृष्टांत है कि ' भू राजस्व संहिता, 1959 (म0प्र0) धारा 50 - स्वप्रेरणा से पुनरीक्षण की शक्ति - युक्तियुक्त समय के भीतर प्रयुक्त की जाना चाहिये - एक वर्ष की अवधि अयुक्तियुक्त हो सकती है । इस प्रकार कलेक्टर सतना द्वारा समयवाधित निगरानी पंजीबद्ध करना पाये जाने से उनके द्वारा लिया गया निर्णय उचित नहीं माना जा सकता।

5/ प्रकरण के अवलोकन से स्पष्ट है कि व्यवहार न्यायाधीश वर्ग-1 मेहर जिला सतना के प्रकरण क्रमांक 50 ए/79 में पारित आदेश दिनांक 27 फरवरी 1992 एवं अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश मेहर के अपीलीय आदेश दिनांक 6-5-99 के परिप्रेक्ष्य में तहसीलदार मेहर ने आदेश दिनांक 10-12-2004 से वादग्रस्त भूमि स्वर्गीय चरणामृत सिंह के नाम की है तब क्या ऐसी भूमि को राजस्व न्यायालय पुनः शासकीय घोषित कर सकता है अथवा स्वामित्व में फेरफार कर सकता है। माननीय व्यवहार न्यायालय के आदेश राजस्व न्यायालय पर बन्धनकारी है एवं माननीय व्यवहार न्यायालय ने वादग्रस्त भूमि स्वर्गीय चरणामृत सिंह जू देव की होना माना है, तब राजस्व न्यायालय को ऐसे मामले में हस्तक्षेप करने की अधिकारिता नहीं है। यदि

R
M

राजस्व मण्डल, मध्य प्रदेश - ग्वालियर

अनुवृत्ति आदेश पृष्ठ

प्र0क01935-एक/2007निगरानी

जिला सतना

आज्ञा तथा

दिनांक

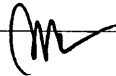
कार्यवाही तथा आदेश

पक्षकारों एवं अन्य

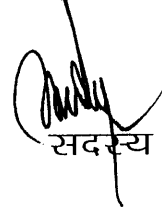
आदि के हस्ता.

व्यवहार न्यायालय के आदेश से राजस्व अधिकारी व्यथित है तब उन्हें व्यवहार न्यायालयों के आदेशों के विरुद्ध सक्षम न्यायालय में अपील में जाना होगा और जब तक व्यवहार न्यायाधीश वर्ग-1 मेहर जिला सतना के प्रकरण क्रमांक 50 ए/79 में पारित आदेश दिनांक 27 फरवरी 1992 एवं अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश मेहर के अपीलीय आदेश दिनांक 6-5-99 स्थिर हैं - वादग्रस्त भूमि के सम्बन्ध में अभिलेख में फेर-बदल करने की अधिकारिता राजस्व न्यायालय को नहीं है किन्तु आयुक्त, रीवा संभाग, रीवा ने प्रकरण क्रमांक 218/2006-07 निगरानी में आदेश दिनांक 22-09-2007 पारित करते समय तथा कलेक्टर सतना ने स्वमेव निगरानी प्रकरण क्रमांक 48/06-07 में आदेश दिनांक 27-8-2007 पारित करते समय उक्त की अनदेखी की है जिसके कारण उनके द्वारा पारित आदेश स्थिर रखे जाने योग्य नहीं है।

6/ उपरोक्त विवेचना के आधार पर निगरानी स्वीकार की जाकर आयुक्त, रीवा संभाग, रीवा द्वारा प्रकरण क्रमांक 218/2006-07 निगरानी में आदेश दिनांक 22-09-2007 एवं कलेक्टर सतना द्वारा प्रकरण क्रमांक 48/06-07 स्वमेव निगरानी में पारित आदेश दिनांक

27-8-2007 त्रुटिपूर्ण होने से निरस्त किये जाते हैं एवं तहसीलदार मेहर के प्रकरण क्रमांक 20 अ 74/2004-05 में पारित आदेश दिनांक 10-12-2004 एवं ग्राम की नामान्तरण पंजी के सरल क्रमांक 5 पर दिये गये आदेश दिनांक 24-1-2006 को यथावत् रखा जाता है।


सदस्य

